

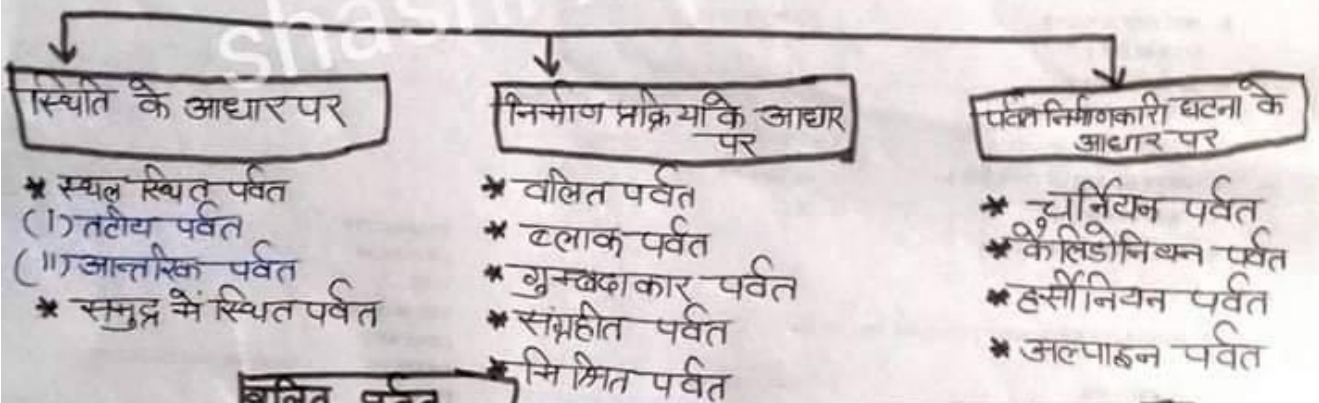
# विश्व के प्रमुख पर्वत एवं पठार

समस्त भूपटल के लगभग 26% भाग पर पर्वत एवं पहाड़ियों का विस्तार है जो भूपटल के द्वितीय श्रेणी के उच्चतम हैं।

पर्वत अपने समीपवर्ती धरातल से सामान्यतः 1000 मी० से अधिक ऊँचे रैसे भाग हैं, जिनका ढाल तीव्र व शिखर संकुचित होता है।

## पर्वतों का वर्गीकरण

### पर्वत



### वलित पर्वत

	स्थिति	सर्वोच्च चोटी
हिमालय पर्वत	एशिया	मा० स्क्वेस्ट
आल्पस	मध्य यूरोप	मा० ब्रैंक
रॉकी	उत्तरी अमेरिका	मा० राल्ट
एंडीज	दक्षिण अमेरिका	स्कांकागुआ
यूराल	एशिया-यूरोप	गौरा-नैरीड-नाथा
अप्लेशियन	उत्तरी अमेरिका	मा० मिचेल
श्यान्शान	रूस (एशिया)	
नॉन-शान	चीन (एशिया)	
सयान	रूस (एशिया)	
स्टेनो बर्ह	रूस (एशिया)	
स्टलस	उ०-प० अफ्रीका	जैवेल टाउकाल
हैनरी पर्वत	यूटाह, USA	
ट्रैक हेल्स	दक्षिणी डकोटा USA	
एडिरॉन्डैक पर्वत	न्यूयार्क USA	

### रकड़ पर्वत

वासजैस	फ्रांस (यूरोप)
ब्रैंक फॉरेस्ट	जर्मनी (यूरोप)
विन्ड्य पर्वत	भारत
संतपुडा पर्वत	भारत
सियेरा नेवदा	USA
हर्ज	जर्मनी
सहल रेंज	पाकिस्तान
कवन्जोरी	यूगाण्डा

### ज्वालामुखी पर्वत

मिनेलोआ	हवाई द्वीपसमूह (USA)
फ्यूजीयामा	जापान
पीपा पर्वत	म्यांमार
विसुवियस	इटली
रेनियर	USA
किलीमंजारी	तंजानिया
शास्ता	U.S.A.



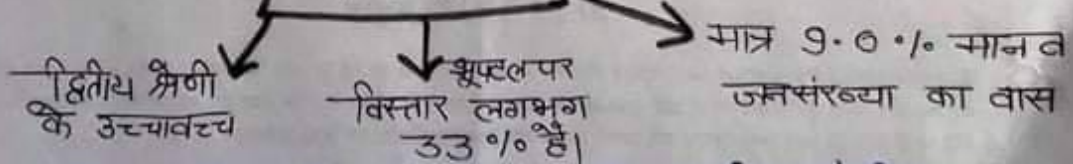
## विभिन्न महाद्वीपों के उच्चतम पर्वत

महाद्वीप	पर्वत	अवस्थिति
1- एशिया	माउण्ट एवरेस्ट (8848 मी०)	नेपाल-तिब्बत
2- दक्षिण अमेरिका	एकोकाबुजा पर्वत (6992 मी०)	अर्जेंटीना
3- उत्तरी अमेरिका	डेनकिलिनैल (6194 मी०)	अमेरिका (अलास्का)
4- अफ्रीका	किलिमंजारो (5895 मी०)	तंजानिया
5- यूरोप	एल्ब्रस पर्वत (5642 मी०)	रूस
6- अंटार्कटिका	विंसन मैसिफ (4892 मी०)	
7- ऑस्ट्रेलिया	कोसिउस्को (2228 मी०)	न्यु साउथ वेल्स

## विश्व के सर्वाधिक उँचे 10 पर्वत

①	माउण्ट एवरेस्ट	- 8848 मी०	-	नेपाल-तिब्बत सीमा पर
②	के-2	- 8611 मी०	-	भारत (Pok)
③	कंचनजंघा	- 8586 मी०	-	भारत-नेपाल सीमा पर
④	लहोत्से	- 8516 मी०	-	नेपाल-तिब्बत सीमा पर
⑤	मंगालू	- 8462 मी०	-	नेपाल-तिब्बत सीमा पर
⑥	चो ओयू	- 8201 मी०	-	नेपाल-तिब्बत सीमा पर
⑦	दींलाशिरी	- 8167 मी०	-	नेपाल
⑧	सांसलू	- 8156 मी०	-	नेपाल
⑨	नंगा पर्वत	- 8126 मी०	-	भारत (Pok)
⑩	जन्नपूर्णा-I	- 8091 मी०	-	नेपाल

## पठार



पठार अपने समोपवर्ती धरातल से पर्याप्त उँचे एवं सपाट तथा चौड़े लीर्य वाले प्रायः मीज आकृति के होते हैं। कभी-कभी पठार मैदानों से भी नीचे होते हैं जैसे - पोडग्राण्ट पठार (U.S.A)। तो कभी-कभी ये पर्वतों से भी उँचे होते हैं। जैसे - तिब्बत का पठार (5000 मी०)।

## पठारों का वर्गीकरण

(A) उत्पत्ति के आधार पर

- 1- मूलतः पर्वतीय पठार
- 2- गिरिपदीय पठार
- 3- बुम्बदाकार पठार
- 4- महाद्वीपीय पठार
- 5- ज्वालामुखी क्रिया से निर्मित पठार

(B) अपरदन चक्र के आधार पर

- 1- तरुण पठार
- 2- प्रौढ़ पठार
- 3- जीर्ण पठार
- 4- पुनर्ज्वलित पठार

## विश्व के प्रमुख पठार

<u>पठार का नाम</u>	<u>स्थिति</u>
पासीर या तिब्बत पठार	तिब्बत (चीन)
प्रायद्वीपीय पठार	भारत
दोटा नागपुर पठार	भारत
मेघालय पठार	भारत
कोलम्बिया पठार	USA
ओजार्क पठार	USA
ईरान पठार	ईरान
अनातोलिया पठार	तुर्की
इरान पठार	म्यांमार
मध्य साइबेरिया पठार	रूस
लेडीयाई पठार	लेबिया व मिस्र
अबेसीनिया पठार	इथियोपिया
कोलोरेडो पठार	USA
पैटमाष्ट पठार	USA
पैटागीनिया पठार	अर्जेंटीना
ब्राजील पठार	ब्राजील
गुयाना पठार	वेनेजुएला, गुयाना, सूरीनाम, फ्रेंच गुयाना
मातेग्रासी पठार	ब्राजील
बोलेविया पठार	बोलेविया
पैतवार पठार	पाकिस्तान
कोरात पठार	थाईलैंड
मोसेल पठार	आइबेरिया प्रायद्वीप (स्पेन)
पियापास पठार	दक्षिण अफ्रीका

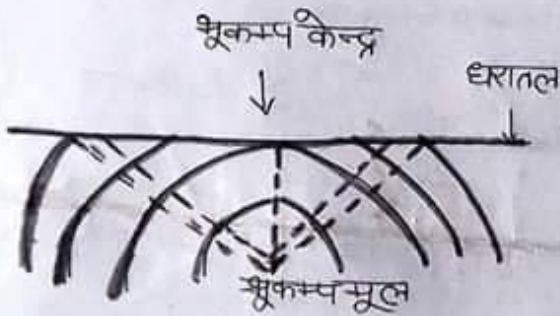


# भूकम्प (Earthquakes)

भूकम्प भूपटल की कम्पन अथवा लहर हैं जो धरातल के नीचे अथवा ऊपर चट्टानों के लचीलेपन या मुकत्वाकर्षण की समस्थिति में दायिक अव्यवस्था होने पर उत्पन्न होती हैं।

## भूकम्प उत्पन्न होने के कारण

- प्राकृतिक कारण (ज्वालामुखी क्रिया, टैलेटी की गतिशीलता, पलन तथा भ्रंशन, क्रस्ट का संकुचित होना आदि)
- मानवीय कारण (अणुबमों का परीक्षण तथा विस्फोट आदि)



विभिन्न प्रकार की लहरें (कम्पन केन्द्र एवं भूकम्प की लहरें)

- भूकम्प मूल - जिस जगह से भूकम्प का कम्पन प्रारम्भ होता है।
- भूकम्प केन्द्र - जहाँ पर भूकम्पीय लहरों का अनुभव सबसे पहले किया जाता है।
- भूकम्प के दौरान भूकम्प मूल से ऊर्जा विमुक्त होती है, उसे प्रत्यास्थ ऊर्जा कहते हैं।

भूकम्पीय लहरें → भूकम्प के दौरान पृथ्वी में कई प्रकार की लहरें उत्पन्न होती हैं, इन लहरों को भूकम्पीय लहरें कहा जाता है। इन्हें तीन श्रेणियों में रखा जाता है -

- ① प्राथमिक या संपीडनात्मक या 'P' तरंगें →
  - सर्वाधिक वेगवान (8-14 km/Sec)
  - सीस्मीोग्राफ स्टेशन पर सर्वप्रथम रिकॉर्ड
  - ध्वनि तरंगों के समान
  - ठोस, द्रव तथा गैसीय पदार्थों से यात्रा करने में सक्षम।



- ② आड़ी अथवा अनुप्रस्थ तरंगें →
  - जल तरंग अथवा प्रकाश तरंग के समान
  - गति - 6 km/Sec
  - तरल पदार्थों से अजरने में असमर्थ।

तथा अणुबमों की गति लहर के समकीर्ण पर



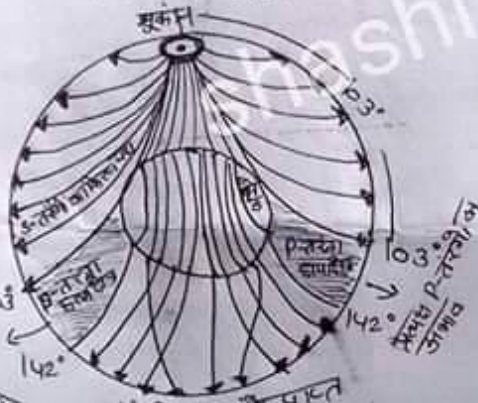
(II) धरातलीय लहरें → (Long waves)

- गति - 3 km/sec
- अधिकेन्द्र पर सबसे बड़ में पहुँचती है
- लम्बी अवधि लहर (सम्पूर्ण पृथ्वी के धरातल का झरझरा करने के कारण)
- जल एवं थल दोनों पर प्रभाव
- सर्वाधिक विनाशकारी

**भूकम्पीय द्वाया क्षेत्र**

Seismograph पर दूरस्थ स्थानों से आने वाली भूकम्पीय तरंगें अभिलेखित होती हैं। यद्यपि कुछ ऐसे भी क्षेत्र हैं जहाँ कोई भी भूकम्पीय तरंग अभिलेखित नहीं होता। ऐसे क्षेत्र को भूकम्पीय द्वाया क्षेत्र कहा जाता है। भूकम्प अधिकेन्द्र से 105° और 145° के बीच का क्षेत्र भूकम्पीय द्वाया क्षेत्र है।

P-तरंग द्वाया क्षेत्र

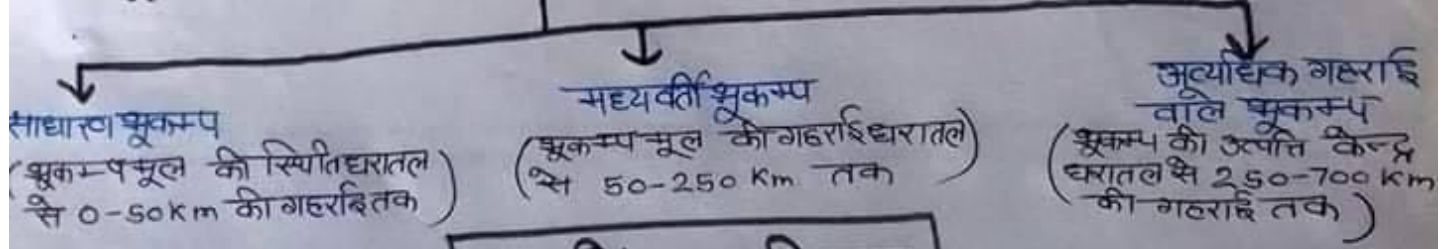


S-तरंग द्वाया क्षेत्र



[भूकम्पीय द्वाया क्षेत्र]

गुटेनबर्ग तथा रिटर ने भूकम्प मूल की गहराई के आधार पर भूकम्प को तीन भागों में विभक्त किया है -



**भूकम्पों का वितरण**

① प्रशान्त महासागरीय तटीय पट्टी - विश्व का सर्वाधिक विस्तृत भूकम्प क्षेत्र यहाँ समस्त ग्लोब के 63% भूकम्प आते हैं। इसमें प्रशान्त महासागर के चारों ओर के समुद्रतटीय भाग सम्मिलित हैं। यथा - चिली, कैलीफोर्निया, अलास्का, जापान, फिलीपींस एवं न्यूजीलैंड आदि।



10) मध्य महाद्वीपीय पट्टी → विश्व के 21% भूकम्प क्षेत्र में आते हैं। पिरेनीज, आल्प्स, काकेशस और हिमालय, म्यांमार की पहाड़ियाँ, पूर्वी द्वीपसमूह की श्रृंखलाएँ इसी पट्टी में समाहित हैं।  
भारत का भूकम्पीय क्षेत्र भी इसी पट्टी में समाहित है।

11) मध्य अटलांटिक पट्टी → यह भूकम्पीय पट्टी मध्य अटलांटिक कटक के सहित स्थित है। यह मैक्सिका उत्तर में स्पिट बर्जेन तथा आइसलैंड से प्रारम्भ होकर दक्षिण में वेस्ट द्वीप के साथ विस्तृत है। इस पट्टी के सर्वाधिक भूकम्प मध्य रेखा के पास आते हैं।

## सुनामिस (Tsunamis)

अन्तःसागरीय भूकम्पों द्वारा उत्पन्न लहरों को सुनामिस कहा जाता है। सागर तली में अचानक परिवर्तन तथा अव्यवस्था के कारण सागरीय जल में विस्थापन हो जाने से सुनामिस लहरों का आविर्भाव होता है।

सागर तली में परिवर्तन कई कारणों से होता है। तली में भूकम्प, अवपातन, अगाध जल में भूस्खलन, खालांश आदि। सागर तली में परिवर्तन तथा विरूपण के दो परिणाम होते हैं।

① यदि सागर तली में अवतलन होता है तो एक वृहद्गति का निर्माण होता है परिणामस्वरूप चारों तरफ से सागरीय जल गति की ओर तीव्रता से लपटता है, जिससे अचानक एवं तीव्रगामी सुनामिस का जन्म होता है।

② यदि सागर तली को ऊपर की ओर उभार होता है तो उस स्थान से जल चारों तरफ तीव्रता से प्रवाहित होता है और सुनामिस का आविर्भाव होता है।

सुनामिस के साथ जल की गति समस्त गहराई तक होती है। इसी कारण सुनामिस लहरें अत्यन्त प्रबल तथा घाति कारक होती हैं।

साधारण तौर पर सुनामिस की ऊँचाई 3-4 फीट (0.9 से 1.2 मीटर) तक होती है, परन्तु असामान्य परिस्थितियों में इनकी ऊँचाई सैकड़ों फीट हो जाती है।

<a href="#">Rajasthan Police Constable Syllabus PDF</a>	<a href="#">Rajasthan Patwari Syllabus PDF</a>
<a href="#">Indian Coast Guard Navik Syllabus PDF</a>	<a href="#">Indian Air Force Airman Group X Y Syllabus Hindi pdf</a>
<a href="#">SSC Junior Engineer Syllabus PDF</a>	<a href="#">SSC CHSL Syllabus PDF</a>
<a href="#">SSC SI ASI Syllabus PDF</a>	<a href="#">Rajasthan Police SI Syllabus PDF</a>
<a href="#">JNVST Syllabus PDF</a>	<a href="#">IBPS RRB Office Assistant Syllabus PDF</a>
<a href="#">SSC MTS Syllabus PDF</a>	<a href="#">SSC CGL Syllabus PDF</a>
<a href="#">UPSC NDA Syllabus PDF</a>	<a href="#">FCI Exam Syllabus PDF</a>